IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया और युवा: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा जिले के कॉलेज छात्रों के विशेष संदर्भ में)

भूरी सिंह

1. सार

यह शोध पत्र आगरा जिले के कॉलेज छात्रों के संदर्भ में सोशल मीडिया के सामाजशास्त्रीय प्रभावों का विश्लेषण करता है। आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब, व्हाट्सएप) युवाओं के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे सोशल मीडिया युवाओं की सामाजिक पहचान, पारस्परिक संबंध, शैक्षिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य और समय प्रबंधन को प्रभावित करता है। इस अध्ययन में 200 कॉलेज छात्रों (18–25 वर्ष) पर सर्वेक्षण और साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव (ज्ञानवर्धन, कनेक्टिविटी) के साथ–साथ नकारात्मक प्रभाव (फोमो, सामाजिक अलगाव, चिंता) भी हैं। अध्ययन शैक्षणिक संस्थानों में डिजिटल साक्षरता पर बल देने का सुझाव देता है।

मुख्य शब्द: सोशल मीडिया, युवा, समाजशास्त्रीय अध्ययन, कॉलेज छात्र, आगरा जिला, डिजिटल संस्कृति

2. परिचय

सोशल मीडिया ने संचार क्रांति ला दी है। जहाँ एक ओर इसने दुनिया को छोटा कर दिया है, वहीं दूसरी ओर इसने व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों की प्रकृति को बदल दिया है। युवा, विशेष रूप से कॉलेज जाने वाले छात्र, इस परिवर्तन के सबसे तीव्र संवाहक हैं। आगरा जिला, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहर (ताजमहल) और बढ़ते शैक्षणिक संस्थानों के लिए जाना जाता है, आधुनिकता और परंपरा के संगम का प्रतिनिधित्व करता है। इस संदर्भ में कॉलेज छात्र सोशल मीडिया का उपयोग कैसे करते हैं? यह उनके सामाजिक व्यवहार, पहचान निर्माण, और अंतःक्रियात्मक पैटर्न को कैसे प्रभावित करता है? यह अध्ययन इन्हीं प्रश्नों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उत्तर देने का प्रयास है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. आगरा जिले के कॉलेज छात्रों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग के पैटर्न (औसत समय, प्रमुख प्लेटफॉर्म) का विश्लेषण करना।
2. सोशल मीडिया के युवाओं की सामाजिक पहचान और आत्म–बोध पर प्रभाव को समझना।
3. सोशल मीडिया के कारण पारस्परिक संबंधों (परिवार, मित्र, शिक्षक) में आए बदलावों की पहचान करना।
4. सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न सामाजिक–मनोवैज्ञानिक समस्याओं (जैसे तनाव, सामाजिक अलगाव) का अध्ययन करना।
5. शैक्षणिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

4.समाजशास्त्रीय सैद्धांतिक ढांचा

इस अध्ययन के लिए निम्नलिखित दो प्रमुख सिद्धांत प्रासंगिक हैं

1- प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद इस सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य प्रतीकों (शब्द, इशारे, लाइक, शेयर, कमेंट) के माध्यम से अर्थ का निर्माण करता है। सोशल मीडिया पर लाइक और फॉलोअर्स की संख्या युवाओं के लिए प्रतीक बन गई है जो उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को परिभाषित करते हैं।

2- संरचनात्मक प्रकार्यवाद यह सिद्धांत समाज को एक व्यवस्था मानता है। सोशल मीडिया ने एक नई सामाजिक संरचना (जैसे ऑनलाइन समुदाय) का निर्माण किया है, जिसके अपने कार्य (जैसे सूचना साझा करना) और निष्क्रियताएँ (जैसे साइबर बुलिंग) हैं।

5. शोध पद्धति

1- शोध डिज़ाइन: मिश्रित पद्धति मात्रात्मक (सर्वेक्षण) + गुणात्मक (साक्षात्कार)

2- क्षेत्र: आगरा जिले के चार कॉलेज सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा कॉलेज, राजकीय महिला महाविद्यालय, एवं एक निजी संस्थान।

3- नमूना: कुल 200 छात्र (100 पुरुष, 100 महिला), जिनकी आयु 18 से 25 वर्ष है। नमूना चयन प्रयोजनमूलक एवं सुविधाजनक विधि से किया गया।

4- डेटा संग्रह उपकरण:

एक संरचित प्रश्नावली

20 छात्रों के अर्ध–संरचित गहन साक्षात्कार

1- विश्लेषण: मात्रात्मक डेटा के लिए सांख्यिकीय विधियाँ (प्रतिशत, तालिका); गुणात्मक डेटा के लिए विषयवस्तु विश्लेषण।

6. विश्लेषण और निष्कर्ष

तालिका 1: सोशल मीडिया उपयोग के सामान्य पैटर्न

विवरण प्रतिशत (% में)

सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम (60%), यूट्यूब (25%), व्हाट्सएप (10%)

प्रतिदिन औसत समय 3–5 घंटे (55%), 5+ घंटे (30%), 1–2 घंटे (15%)

उपयोग का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन (50%), शैक्षिक (20%), संपर्क (20%), अन्य (10%)

प्रमुख निष्कर्ष:

1.**सकारात्मक प्रभाव:**

1. 72% छात्रों ने माना कि सोशल मीडिया ने उन्हें नए कौशल सीखने (ट्यूटोरियल, कोर्स) में मदद की है।
2. 65% छात्रों को लगता है कि यह दूर रहने वाले दोस्तों और रिश्तेदारों से जुड़े रहने का एक अच्छा माध्यम है।
3. कई छात्रों ने इसे करियर के अवसर (जैसे फ्रीलांसिंग, कंटेंट क्रिएशन) का एक नया द्वार बताया।

2. **नकारात्मक प्रभाव:**

1. सामाजिक तुलना : 58% छात्रों ने स्वीकार किया कि दूसरों की परफेक्ट ऑनलाइन तस्वीरें देखकर वे अपने जीवन से असंतुष्ट महसूस करते हैं।
2. फोमो : 62% छात्रों ने बिना कारण फोन चेक करने की आदत बताई, कहीं कोई अपडेट मिस न हो जाए।

3. पारस्परिक संबंध: 45% छात्रों ने माना कि सोशल मीडिया के कारण परिवार के साथ बातचीत का समय कम हुआ है। साथ ही, ऑनलाइन गलतफहमियों के कारण दोस्ती टूटने की घटनाएँ भी सामने आईं।

4. मानसिक स्वास्थ्य: 40% छात्रों ने सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से चिंता, नींद न आना या ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई की बात कही।

4. लैंगिक अंतर

1. छात्राएँ: अधिक सुरक्षा संबंधी चिंता (ऑनलाइन उत्पीड़न का डर) और शारीरिक रूप (बॉडी इमेज) को लेकर दबाव महसूस करती हैं।

2. छात्र: गेमिंग और मनोरंजन का उपयोग अधिक, साथ ही सामाजिक जुड़ाव के लिए कम प्रयास।

चर्चा

आंकड़े बताते हैं कि सोशल मीडिया युवाओं के लिए एक दोधारी तलवार की तरह है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के सिद्धांत के अनुसार, लाइक छात्रों के लिए सामाजिक स्वीकार्यता का प्रतीक बन गया है, जिसकी कमी उनमें असुरक्षा पैदा करती है। वहीं, दुर्खीम के एनोमी (सामाजिक अनियमता) की अवधारणा यहाँ प्रासंगिक हो जाती है सोशल मीडिया ने कृत्रिम रिश्तों का एक जाल बिछा दिया है, जहाँ लोग शारीरिक रूप से एक साथ होकर भी मानसिक रूप से अलग होते जा रहे हैं। आगरा का ऐतिहासिक परिवेश (जहाँ परंपरा प्रबल है) और डिजिटल दुनिया के बीच ये छात्र एक सांस्कृतिक संघर्ष से गुजर रहे हैं।

सुझाव

1. डिजिटल साक्षरता पाठ्यक्रम कॉलेजों में सोशल मीडिया के समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर अनिवार्य सेमिनार आयोजित किए जाएँ।

2. समय प्रबंधन: छात्रों को डिजिटल डिटॉक्स (प्रतिदिन कुछ घंटे बिना फोन) और स्क्रीन–टाइम सीमित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

3. अभिभावक–शिक्षक संवाद: शिक्षक और अभिभावक मिलकर छात्रों के ऑनलाइन व्यवहार पर नज़र रखें, बिना उनकी गोपनीयता का उल्लंघन किए।

4. मानसिक स्वास्थ्य सहायता कॉलेजों में परामर्श केंद्र खोले जाएँ, जहाँ छात्र सोशल मीडिया से उत्पन्न चिंता या अवसाद के लिए मदद ले सकें।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया आगरा जिले के कॉलेज छात्रों के सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। यह तकनीकी रूप से जहाँ उन्हें सशक्त बनाता है, वहीं सामाजिक रूप से यह चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। इसका युवाओं पर समग्र प्रभाव पूरी तरह सकारात्मक या नकारात्मक नहीं कहा जा सकता; यह उपयोग के पैटर्न, सामाजिक वर्ग, और लिंग जैसे कारकों पर निर्भर करता है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि तकनीक हमारी सेवक है, सेवा–भावी नहीं। आलोचनात्मक और संतुलित उपयोग ही कुंजी है।

सीमाएँ

1- यह अध्ययन केवल आगरा जिले तक सीमित है, इसलिए परिणामों को सम्पूर्ण भारत या अन्य क्षेत्रों के लिए सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

2- स्वरिपोर्टेड डेटा पर निर्भरता के कारण, कुछ छात्रों ने अतिरंजना या कमी की हो सकती है।

3- समय और संसाधनों की कमी के कारण लंबी अवधि का अध्ययन संभव नहीं था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- बॉयड, डी. (2014). इट्स कॉम्प्लिकेटिड: द सोशल लाइव्स ऑफ नेटिव टीन्स. येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

2- गोफमैन, ई. (1959). द प्रेजेंटेशन ऑफ सेल्फ इन एवरीडे लाइफ. एंकर बुक्स.

3- सिंह, ए., और शर्मा, आर. (2020). युवाओं पर सोशल मीडिया का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावरू एक समीक्षा. जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 42(3), 115–125.

4- तुर्कले, शेरी (2011). एलोन टुगेदर व्हाय वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम ईच अदर. बेसिक बुक्स.

5- वर्मा, ए. (2022). भारत में डिजिटल विभाजन और युवा. राजकमल प्रकाशन.